॥ आरती श्री गायत्री माता की ॥
Aarti Shri Gayatri Mata Ki

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ।

आदि शक्ति तुम अलख निरंजन जग पालन कर्त्री ।
दु:ख शोक भय क्लेश कलह दारिद्रय दैन्य हर्त्री ॥१॥

ब्रह्मरूपिणी, प्रणत पालिनी, जगत धातृ अम्बे ।
भव-भय हारी, जन हितकारी, सुखदा जगदम्बे ॥२॥

भयहारिणि, भवतारिणि, अनघे अज आनन्द राशी ।
अविकारी, अघहरी, अविचलित, अमले, अविनाशी ॥३॥

कामधेनु सत-चित-आनन्दा जय गंगा गीता ।
सविता की शाश्वती, शक्ति तुम सावित्री सीता ॥४॥

ऋग्, यजु, साम, अथर्व, प्रणयिनी, प्रणव महामहिमे ।
कुण्डलिनी सहस्रार सुषुम्ना शोभा गुण गरिमे ॥५॥

स्वाहा, स्वधा, शची, ब्रह्माणी, राधा, रुद्राणी ।
जय सतरूपा वाणी, विद्या, कमला, कल्याणी ॥६॥

जननी हम हैं दीन, हीन, दु:ख दारिद के घेरे ।
यदपि कुटिल, कपटी कपूत तऊ बालक हैं तेरे ॥७॥

स्नेह सनी करुणामयि माता चरण शरण दीजै ।
बिलख रहे हम शिशु सुत तेरे दया दृष्टि कीजै ॥८॥

काम, क्रोध, मद, लोभ, दम्भ, दुर्भाव द्वेष हरिये ।
शुद्ध, बुद्धि, निष्पाप हृदय, मन को पवित्र करिये ॥९॥

तुम समर्थ सब भाँति तारिणी, तुष्टि, पुष्टि त्राता ।
सत मारग पर हमें चलाओ जो है सुखदाता ॥१० ॥

जयति जय गायत्री माता, जयति जय गायत्री माता ॥

॥ इति आरती श्री गायत्री माता सम्पूर्णम ॥

allastrologysolutions.com